ISSN:2583-8849



तरुण कुमार दाधीच
उदयपुर, राजस्थान

हरियाली को तरसते हैं

मेरे गांव में
चहुंमुखी विकास हो गया
योजना के अनुसार
सड़कें बन गई
बहुत खुशी हुई
गांव से नगर जुड़ा
नगर से महानगर जुड़ा
इस तरह
सारा देश जुड़ा
सड़क के बीच
आने वाले पेड़
काटे गए थे
वो बाधक थे
निर्माण के लिए?
एक नहीं
कई सारे पेड़ कटे
आखिर
सड़कें बन गई
और अब हम
धूप की तपिश में
सफर करते हैं
खोई हुई
हरियाली को तरसते हैं
अपने कर्मों का फल है
अच्छाइयां बुराइयां
हमारे पीछे चल रही है
हमारी परछाइयां

हरियाली की आस

बुजुर्गों ने लगाए,हमने लगाए
पौधे वपन करके पेड़ लगाए

चारों तरफ हरियाली ही लाए
पौध संरक्षण से खुशियां लाए

विकास के लिए पेड़ कटने लगे
हम हरियाली को तरसने लगे

अतिवृष्टि हुई अनावृष्टि हुई
समवृष्टि की चाह पूरी न हुई

इसका दोष अब किसको दें
क्या इसी तरह होता रहने दें

अब कर्मों का फल भुगतना है
हरियाली के लिए तरसना है